Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
4
2020
VOL. 175

Founder's Essay

एक रोल मॉडल का महत्व

लोग मुझसे अक्सर पूछते हैं, "संस्थापक निवानो, आप को कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस तरह के व्यक्ति से मिलते हैं, आप हमेशा उसके अच्छे बिंदुओं को खोजने में सक्षम होते हैं, और जो भी परिस्थितियाँ आपके सामने आती हैं, आप हमेशा चीजों को सकारात्मक रूप से लेते हैं। क्या इसमें कुछ रहस्य है?"

मैं नहीं जानता कि इसे कोई रहस्य कहूँ, किन्तु मैं कल्पना करता हूँ कि बुद्ध उस व्यक्ति को कैसे जवाब देते, या बुद्ध उस परिस्थिति में क्या सोचते। फिर मैं उनके उदाहरण के अनुरूप काम करता हूँ।

बच्चे अपने माता-पिता की नकल करके वयस्क बनते हैं। शिष्य अपने आकाओं के ऊपर अपने को ढाल कर निपुण हो जाते हैं। यदि आपके पास भी कोई ऐसा व्यक्ति है जिसकी आप प्रशंसा करते हैं और चाहते हैं कि आप उसके जैसा बन जायें, तो उनके उदाहरण का पूरी तरह से पालन करें और एक दिन आप वास्तव में उनके जैसे ही बन जाएँगे।

आप जिन लोगों से मिलते हैं और पुण्डरीक सूत्र का अनुपालन करते हुए जिन परिस्थितियों से उसमें मिलते हैं, उन्हें देखते हुए, सूत्र का अनुपालन करने का अर्थ है कि आप पढ़ने और सूत्र को पढ़ते, उसका पाठ करते और जो सीखते हैं उसको कार्य में लाना है। हम बुद्ध को अपनी नग्न आँखों से नहीं देख सकते हैं, जिनका परिनिर्वाण लगभग 2,500 वर्ष पूर्व हुआ था, लेकिन अगर हम सूत्र द्वारा बताए अनुसार अभ्यास करेंगे तो हम बुद्ध को अपने सामने देख पाएँगे।

निक्क्यो निवानो, काइसो ज़ुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 14 - 15

Living the Lotus
Vol. 175 (April 2020)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Osada
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

प्रेसिडेण्ट का संदेश

पूर्ववाग्रहों से ऊपर उठना

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

पूर्वाग्रहग्रस्त सोच से ऊपर "मैं सही हूँ"

अधिकांश समय, हम नहीं मानते हैं कि हमारे विचार और कार्य गलत हैं। यहाँ तक कि अगर कोई यह बताता है कि हम एकपक्षीय विचार व्यक्त कर रहे हैं, तो हमें नहीं लगता कि हम पूर्वाग्रहित या पक्षपाती तरीके से चीजों को देख रहे हैं।

दूसरी ओर, जिस तरह हम विनम्रतापूर्वक किसी ऐसे व्यक्ति के शब्दों पर विश्वास करते हैं, जो हमारे प्रति सदा दयालु है, लेकिन हम छिद्रान्वेसी व्यक्ति की राय को अस्वीकार करते हैं, क्या हम सही नहीं हैं? हम अपनी भावनाओं और परिस्थितियों को महत्व देते हैं, जब बात आती है कि हम चीजों को कैसे देखते हैं या अनुभव करते हैं। यह बिना कहे चला जाता है कि यह एक संकीर्ण, आत्म-केंद्रित दृष्टिकोण है। यदि हम "मेरा विचार सही है" और "मेरा निर्णय गलत नहीं है" ऐसे दृष्टिकोण को मजबूती देते हैं तो, चीजों को सही ढंग से देखने की हमारी क्षमता कमजोर हो जाती है।

इसलिए, जब हम ऐसे दृष्टिकोण पर विचार कर रहे हैं, तो मैं पुण्डरीक सूत्र से एक मार्ग प्रस्तुत करता हूँ, जो हमें अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिए प्रेरित करेगा। अध्याय 12, "देवदत्त" में, हमें ये शब्द मिलते हैं: "मैंने पूर्ण संवेदनशीलता प्राप्त की है और पूर्णरूप से मुक्त प्राणी हूँ। ये सब देवदत्त से अच्छी मित्रता के कारण है।"

इस महत्वपूर्ण उक्ति में, शाक्यमुनि ने संघ के समक्ष देवदत्त के प्रति अपना आभार व्यक्त किया, जिसमें शाक्यमुनि के प्रति इतनी शत्रुता थी कि उसने उनकी हत्या करने की कोशिश की थी। मैं इस उक्ति को एक स्विच की भूमिका के रूप में व्याख्या करता हूँ, जो हमारे दिमाग को खोल सकता है और हमारे दृष्टिकोण को पूर्वाग्रहों से पूरी तरह से मुक्त कराकर और उसे व्यापक बना सकता है।

बुद्ध-प्रकृति में एकनिष्ठ विश्वास

ऐसा कहा जाता है कि जब आकाश का गहरा अंधेरा क्षितिज सफेद होना शुरू होता है, सुबह का तारा उस पर चमकने लगता है। शाक्यमुनि ने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया। उस समय उनका मन अवश्य मध्य आकाश तक पहुँच गया होगा, ब्रह्मांड के साथ एकीकृत हो गया होगा और महान सत्य को समझ लिया होगा।

शायद उसने चीजों को अन्तरिक्षीय परिपेक्ष्य से देखा; शायद प्रात: के तारे की जगमगाती रोशनी में अपने एवं दूसरे लोगों के बुद्ध-स्वभाव की चमक का प्रतिबिम्ब महसूस करना था। किसी भी तरह, उस पल

में, शाक्यमुनि की आँखों ने लोक की वास्तविकता को वैसे ही देखा होगा जैसे कि - दूसरे शब्दों में, बुद्ध-प्रकृति ने हर उस चीज़ में अवतार लिया, जो खूबसूरती से झिलमिलाती और चमकती थी।

इसके अलावा, मुझे लगता है कि देवदत्त के आरोपों और हमलों की कठोर सच्चाई से शाक्यमुनि ने सीधे तौर पर सामना करने के लिए मन को मध्याकाश में पहुँचाया और हृदय को विशाल विस्तृत बनाया । उस क्षण, आत्म-केंद्रित दृष्टि से देवदत्त को "एक बुरा व्यक्ति, जिसने चोट पहुँचाने की कोशिश की" देखनेवाले का मन बदल कर विस्तृत विशाल हो गया जिसे बुद्ध स्वभाव पर विश्वास है और सभी को एक साथ हाथ जोड़कर श्रद्धांजलि दे सकता है। इसलिए, देवदत्त, जो मन के परिवर्तन का प्रेरणाश्रोत बना, वह शाक्यमुनि के लिए "अच्छा मित्र" के सिवाय कुछ और कैसे हो सकता है?

यदि आप इस दृष्टि को लेते हैं कि सभी चीजें बुद्ध-प्रकृति में सन्निहित हैं, तो आप एकपक्षीय दृष्टि के आधार पर लोगों को चोट नहीं पहुँचायेंगे या बहस नहीं करेंगे। इससे पहले कि आप दूसरों की आलोचना करें, अगर आपके पास यह याद करने का मौका है कि, "ओह, वे भी, बुद्ध-प्रकृति के अलावा और कोई नहीं हैं," पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण रखने के बारे में चिंता करने की आपको जरूरत नहीं है।

हालाँकि, बुद्ध-प्रकृति में विश्वास करने का मतलब केवल दूसरों में अच्छाई देखना नहीं है। इसका अर्थ है अन्य लोगों को संपूर्ण रूप में बुद्ध-प्रकृति के रूप में प्रतिष्ठित करना है। मुझे लगता है कि जब तक हम सभी लोगों के बुद्ध-स्वभाव पर विश्वास करते हैं, हम विरोधाभासों और कठिन समस्याओं का सामना करते हुए विकसित होते रहते हैं।

जैसा कि बौद्ध विचारक शुइचि माइदा (1906–67) ने "विश्वास" के बारे में कहा था:
लोक में, लोग दूसरों पर शक करते हैं,
और उनके साथ गलती करते हैं,
या यह कहते हैं कि वे लोग,
उन पर विश्वास नहीं करते हैं। [...]
दूसरे लोगों पर विश्वास करने से,
अन्य लोग आप पर विश्वास करेंगे,
और इसे विश्वास करने का,
महान तरीका कहा जाता है।

हम बचपन में लौट नहीं सकते हैं, जब हमारे पास इतने सारे अनावश्यक पूर्वाग्रह नहीं थे। हालाँकि, बहुत कम से कम, त्यौहार के दिन जब शाक्यमुनि बुद्ध के जन्म का जश्न मनाते हैं - हम इस अवसर पर अपने धर्म केंद्रों में स्थापित नवजात शाक्यमुनि की प्रतिमा को श्रद्धांजलि देते हैं - यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने निर्दोष, बेदाग मन को फिर से प्राप्त करते हैं और गहराई से अपने और दूसरों के बुद्ध-स्वभाव को प्रतिबिंबित करते हैं।

From *Kosei*, April 2020

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
अध्याय 14: शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार

पूर्ववर्ती अध्याय में, बोधिसत्वों और अन्य उपस्थित जनों ने परिषद में सभी बाधाओं और नुकसान के सामने मजबूती से खड़े रहने के अपने दृढ़ संकल्प की घोषणा की। इस अध्याय में पुण्डरीक सूत्र के अभ्यास और प्रचार प्रसार करने के बारे में बुद्ध का आदेश है, अर्थात् शान्त मन से हमेशा धर्म प्रचार में लीनता व्यक्ति के स्वयं के संकल्प के महत्व का लिए प्रदर्शन है।

इस उद्देश्य से, मन की स्थिति को प्राप्त करने के लिए बुद्ध ने विशिष्ट निर्देश दिया है। उनका आश्वासन है कि पुण्डरीक सूत्र का विश्वास और अभ्यास सभी को सभी कठिनाइयों को दूर रखेगा और मन की शांति प्राप्त करने में सक्षम करेगा। उनका यह भी आश्वासन है कि चूँकि हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति अलग नहीं है, इसलिए मन की शांति शरीर में व्याप्त है और किसी के जीवन के सभी पहलुओं में प्रकट होती है।

चार शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार

इस अध्याय के प्रारंभ में, बोधिसत्त्व मंजुश्री बुद्ध से कहते हैं, "लोकप्रतिष्ठ! हम आने वाले भ्रष्ट युग में इस देशना की किस तरह विवेचना कर पाएँगे?" बुद्ध मंजुश्री के प्रश्न का उत्तर देते हुए बताते हैं कि बोधिसत्वों को चार शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार के रूप में ज्ञात अभ्यासों का पालन करना चाहिए।

इनमें से पहला शारीरिक शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार का अभ्यास है। इसमें मौलिक दृष्टिकोण शामिल है, जो व्यक्तिगत व्यवहार और दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों को निर्धारित करता है।

दूसरा, मौखिक शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार का अभ्यास है। यह बोधिसत्वों को कटु वचन नहीं बोलने की चेतावनी देता है।

तीसरा, शान्त मन से और सौहार्दपूर्ण व्यवहार का अभ्यास है। यह बोधिसत्वों को हमेशा ईर्ष्या और छल से मुक्त शान्त मन से धर्म की विवेचचना करने का निर्देश देता है।

चौथा, शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण व्यवहार का अभ्यास है। यह सभी लोगों को बुद्ध मार्ग तक ले जाने और इसे पूरा कराने के लिए समर्पित रहने के व्रत की ओर बोधिसत्वों का मार्गदर्शन करता है।

सिर के मुकुट में जड़ा रत्न का दृष्टान्त

यह पुण्डरीक सूत्र के सात दृष्टान्तों में से छठा: सिर के मुकुट में जड़ा रत्न का दृष्टान्त है।

इस दृष्टान्त में, एक अविश्वसनीय रूप से शक्तिशाली राजा है, जिसने क्रमश: छोटे राज्यों के सभी राजाओं को जीत लिया है, जिन्होंने उसके शासन के अधीन रहना अस्वीकार किया था। राजा उन लड़ाईयों के सेनापतियों को भूमि, संपत्ति, घोड़े और अन्य विभिन्न खजाने के साथ पुरस्कृत करता है, लेकिन वह एक चीज नहीं देता है: मुकुट में जड़ा रत्न, एक चमकीला मोती है। यह राजा का प्रतीक अमूल्य मोती जिसे देता, उसका प्राप्तिकर्ता और उसके अनुयायी चकित और भ्रमित हो जाते।

अपने किसी भी सेनापति को सिर का मुकुट देने की राजा की अनिच्छा बुद्ध के उस कार्य का प्रतीक है, जब उन्होंने बोधिसत्त्वों को पुण्डरीक सूत्र के उपदेश में विलम्ब किया। बुद्ध बोधिसत्त्वों को मन

की स्थिरता, मानवीय पीड़ा से मुक्ति, और भ्रमजाल से मुक्ति से पुरस्कृत करते हैं, लेकिन पुण्डरीक सूत्र के उपदेश को तुरंत प्रस्तुत नहीं किया क्योंकि इसकी शिक्षा को समय से पहले साझा करने से वे केवल भ्रमित होते।

हालाँकि, जैसे राजा अंत में विजयी सेनापति को सिर के मुकुट का मोती दे देता है, बुद्ध ने अपने उच्च स्तर तक पहुँचे अनुयायियों को अंतिम पुरस्कार के रूप में पुण्डरीक सूत्र की देशना का उपदेश किया।

स्व का भाव अमूर्त है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है

इस दृष्टान्त का सतही भाव पुण्डरीक सूत्र की उच्चतम देशना के रूप में इसकी प्रशंसा करता है, साथ ही इस तथ्य को दर्शाता है कि इस तरह की देशना की लोक में प्रस्तुति अपूर्व घटना है। लेकिन यह दृष्टांत जीवन के अन्य पहलुओं का भी प्रतिनिधित्व करता है।

सबसे पहले, हम ध्यान दें कि राजा के पास देने के लिए अन्य मूल्यवान गहने और संपत्ति हैं, लेकिन वे उसके शरीर जुड़े हैं, जबकि अकेला उज्ज्वल मोती उसके सिर पर है। सिर मन को धारण करता है जो शरीर को निर्देशित करता है। लोग अपने शरीर का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन स्व के भाव का दोहन सबसे महत्वपूर्ण है, हालाँकि यह मुश्किल है क्योंकि स्व का भाव अमूर्त है। हालाँकि, जब तक हम दृढ़ता से सोच विचार नहीं करते हैं और सोच विचार को नहीं बढ़ाते हैं, तब तक हम सराहनीय इंसान नहीं बन सकते हैं। इस दृष्टांत से हमें जो सबक लेना चाहिए वह यह है कि मानव जाति का सर्वोच्च उद्देश्य स्व के भाव को ऊँचा उठाना है और अंत में बुद्धत्व प्राप्त करना है।

अंतिम देशना अन्त में दिया गया

दूसरा, दृष्टांत हमें निर्देश देता है, क्योंकि पुण्डरीक सूत्र अंतिम देशना है, इसे ऐसे लोगों को उपदेश किया जाता है, जो अभी तक इसे समझने के लिए तैयार नहीं हुए है, यह केवल भ्रम फैलायेगा और पहेली बना रहेगा।

हम सामान्य जीवन में सहज ही देख सकते हैं कि किसी भी विषय के अध्ययन या तकनीक के मामले में ठीक यही स्थिति है: किसी भी विषय में साधारण प्रवेशार्थी को उच्च स्तर का ज्ञान देने का प्रयास उसे भ्रमित करेगा। इसलिए, शिक्षक को सरल चीजों से शुरू करना चाहिए। फिर, जैसा कि छात्र सीखता है और आगे बढ़ता है, यदि शिक्षक को छात्र की प्रगति की समझ है, वह उच्चतम ज्ञान देने का प्रयास कर सकता है। यह विधि दृष्टान्त द्वारा सुझाई गई है।

प्रारंभिक अभ्यास का महत्व

यह दृष्टांत हमें यह भी दिखाता है कि परम को पाने के लिए प्रारंभिक अभ्यास आवश्यक है। आज लोग, विशेषकर युवाओं ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन वे अक्सर इस तरह के प्रारंभिक अभ्यास से शुरू करने के लिए तैयार नहीं हैं और तुरंत एक उन्नत चरण में जाना चाहते हैं। यदि वे प्रारंभिक अभ्यास की उपेक्षा करते हैं, वे जीवन में या काम में, कुछ भी हासिल नहीं कर सकते हैं। महान सफलता प्राप्त करने के लिए प्रारंभिक अभ्यास आवश्यक है। यह वही है जो हमें मुकुट में मनिरत्न का दृष्टांत से सीखना चाहिए।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.141-47.

Director's Column

सब कुछ बुद्ध-प्रकृति के रूप में देखना

इस महीने, हम बौद्ध शाक्यमुनि का जन्मदिवस मना रहे हैं। अप्रैल महत्वपूर्ण महीना है, जब हम शाक्यमुनि का जन्मदिवस मनाते हैं, और हमें अपने जीवन की अनमोलता का भी एहसास होता है। हमें अपने स्वयं के बुद्ध-स्वभाव के प्रति सचेत रहना चाहिए और अपने समाज के विकास और संसार के लोगों की खुशहाली के लिए काम करने की पूरी कोशिश करने की अपनी प्रतिज्ञा का नवीकरण करना चाहिए।

इस महीने के अपने संदेश में, प्रसिडेण्ट निचिको निवानो ने हमें एकपक्षीय दृष्टिकोण से परे जाने के महत्व की याद दिलाने के लिए पुण्डरीक सूत्र के 12 वाँ देवदत्त परिवर्त से एक अंश उद्धृत किया है। वे हमें सचेत करते हैं कि यदि हम ऐसा दृष्टिकोण रखते हैं कि "सब कुछ में बुद्ध-प्रकृति है," तो हमें सभी चीजों को बुद्ध-प्रकृति के प्रतिरूप के रूप में मानना चाहिए, और सम्पूर्ण हृदय से अन्य लोगों में विश्वास रखना चाहिए। तभी हमारा दृष्टिकोण व्यापक होगा, हमारा एकपक्षीय विचार मिट जाएगा, और हम सभी चीजों को स्पष्ट रूप से देख पाएँगे।

हँसमुखता, दयालुता और गर्मजोशी के अपने मूलाधार मानवीय गुणों को जगाने के लिए, मुझे उम्मीद है कि हम सब इस महीने को अपने और दूसरों के बुद्ध-स्वभाव पर गहराई से विचार विमर्श करने का समय बनाएँगे।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement

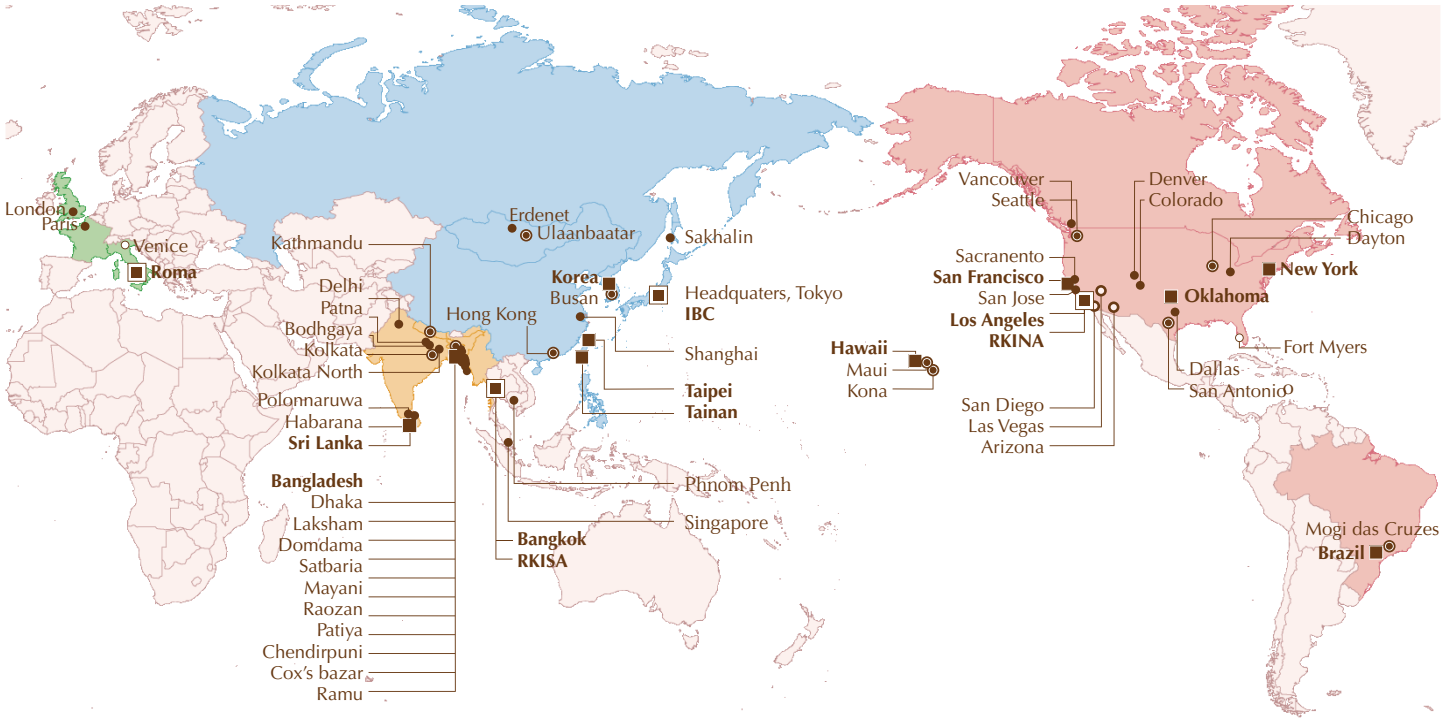

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212FAX: 1-808-455-4633
Email: info@rkhawaii.org URL: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
POBox 33636, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: http://www.rkina.org/losangeles.html

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 FAX: 1-650-359-6437
Email: info@rksf.org URL: http://www.rksf.org

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco
Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: http://rk-ny.org

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: http://rkchi.org

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
URL: http://www.rkftmyersbuddhism.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: http://www.rkina-dayton.com

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
Email: info@rkina.org URL: http://www.rkina.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: http://buddhistlearningcenter.org

Rissho Kosei-kai of Vancouver
Please contact RKINA

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: http://www.rkk.org.br

Facebook: https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil
Instagram: https://www.instagram.com/rkkbrasil

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓国立正佼成会
〒 04420 大韓民国 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓国立正佼成会釜山支部
〒 48460 大韓民国釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會
台湾台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大厦 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會
台湾台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani
Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh
Rissho Kosei-kai Damdama
Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh
Rissho Kosei-kai Patiya
China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria
Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,
Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka
408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham
Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar
Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan
Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet
2F Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum,
Orkhon province, Mongolia

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Paris
Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)
166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: http://www.ibc-rk.org

Published by Rissho Kosei-kai International